



॥ अग्नि देव चालीसा ॥

अग्नि देव पूजा, जो कोई नर करे
सुख संपत्ति धन धान्य से, जीवन सफल
बनावे

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ अग्नि देव चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

श्री गणपति गुरुदेव को, करूँ प्रथम प्रणाम।
अग्निदेव की वंदना, पूर्ण करें सब काम॥

जय अग्निदेव जगत उजियारा।
तेजपुंज तुम शक्ति अपारा॥

यज्ञ रूप प्रभु वेद बखाना।
सकल देव में श्रेष्ठ ठिकाना॥

हवन कुंड में आप विराजो।
भक्त जनों के कष्ट निवाजो॥

लाल वर्ण अति तेजस्वी देवा।
सुर नर मुनि करें नित सेवा॥

हव्यवाहन नाम तुम्हारा।
देवों तक पहुँचाओ द्वारा॥

अन्न पचाओ जीवनदाता।
ऊर्जा शक्ति के विधाता॥

ऋषि मुनि सब ध्यान लगावें।
वेद पुराण तुम्हारी गावें॥

पाप ताप सब दूर भगाओ।
मन मंदिर में ज्योति जलाओ॥

यज्ञ बिना शुभ कर्म न होई।
तुम बिन सिद्धि मिले न कोई॥

सूर्य समान प्रकाश तुम्हारा।
दूर करो अज्ञान अँधियारा॥

घर-घर दीपक रूप में आओ।
सुख समृद्धि का मार्ग दिखाओ॥

दुष्ट दोष सब भस्म करावा।
भक्त जनन पर कृपा बरसावा॥

बल बुद्धि विद्या के दाता।
जीवन पथ के तुम विधाता॥

जो नर नारी ध्यान लगावै।
मनवांछित फल सहजहि पावै॥

संकट रोग निकट न आवै।
अग्निदेव रक्षा कर जावै॥

हवन पूजन जो नर करई।
उस पर कृपा सदा तुम धरई॥

धन वैभव घर में बढ़ जावे।
भय चिंता सब दूर भगावे॥

भक्ति भाव से जो गुण गावै।
सुख शांति समृद्धि वह पावै॥

जय जय जय अग्नि महाराजा।
कृपा करो सब काज समाजा॥

॥ दोहा ॥

अग्निदेव चालीसा पढ़े, श्रद्धा सहित जो कोय।
तेज, आरोग्य, सुख मिले, संकट रहे न सोय॥

